सा विद्या या विमुक्तये

जिससे मुक्ति मिले, वही विद्या है! मुक्ति के दो प्रकार हो सकते हैं : एक अल्पकालिक व दूसरा दीर्घकालिक। अल्पकालिक मुक्ति से साशय है जरूरत के अनुसार इच्छित ज्ञान अर्जित कर अर्थोपार्जन करना जबकि दीर्घकालिक मुक्ति के माध्यम से सतत, धारणीय व स्थाई संवृद्धि का स्तर प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त होता है। विज्ञान प्रगति की शुरुआत चित्र कथा पढ़कर की थी और अब सवाल जवाब स्तंभ हो या आमुख कथा सभी एक से बढ़कर एक प्रतीत होते हैं। क्या आप जानते हैं? नामक स्तंभ तो वास्तव में मुक्ति की पराकाष्ठा पर आसीन कर देता है। शाश्वत सत्य यह है कि आध्यात्म व विज्ञान के संगम मात्र में ही मानव कल्याण भी निहित है। जून 2014 के अंक में तो अवश्य ही पर्यावरण के प्रति जागरूकता में श्रीवृद्धि की गई और भारतीय धर्म दर्शन की चर्चा के माध्यम से यह सिद्ध हो गया कि मानव का प्रकृति से अटूट संबंध है। पेड़ पौधों की पूजा करके सुखानुभूति की जो परंपरा विद्यमान रही है वास्वत में उसी के बल पर आज मानव समुदाय विकास के शिखर की ओर अग्रसर है। यह एक मात्र पत्रिका विशेषतः वैज्ञानिक कलेवर में मिलकर आध्यात्म को समर्पित व मानव कल्याण के लिए नित नवीन जानकारी प्रदान करने वाली वह कुंजी है जो मुक्ति के दीर्घ स्वरूप को प्रदान करने वाली है।

विज्ञान प्रगति शस्त्र के समान तीक्ष्ण व शास्त्र के समान मार्गदर्शक है। विज्ञान प्रगति एक परंपरा है जिसका एक मात्र उद्देश्य जड़ से चेतन की ओर अग्रसर कर मानव मन में विज्ञान का रोचक अनुभव प्रदान करना है। अंधविश्वास का अंत करना हो या जागरूकता लानी हो तो बस एक ही मार्ग है विज्ञान प्रगति। 62 वर्षों से भारतीय जनमानस में विज्ञान का सुंदर प्रस्तुतीकरण कर विज्ञान प्रगति ने एक ऐसा अभियान छेड़ा है जो अवश्य ही भारत को विकसित राष्ट्र की श्रेणी की ओर तेजी से अग्रसारित कर रहा है। विज्ञान प्रगति के समस्त पाठकगणों, प्रकाशक व समस्त सहयोगियों को धन्यवाद। ऐसे ही व नए प्रतिमानों के साथ विज्ञान प्रगति आगे भी शीर्ष की ओर बढ़ती रहे ऐसी मेरी अभिलाषा है।

श्री विवेक भार्गव, सुपुत्र डा. एस. एन. पाण्डेय, अशोक नगर कालोनी, सारनाथ, वाराणसी 221007 (उ.प्र.)
[मो. : 09415132955]

मार्गदर्शक पत्रिका

विज्ञान प्रगति का जून 2014 का अंक प्राप्त हुआ जिसमें प्रकाशित जानकारियाँ बड़े ही कमाल की लगीं। 'ई-कचरा : पर्यावरण प्रदूषण का नया आयाम' तथा श्री दीपक कोहली द्वारा रचित आमुख कथा 'हमारे पर्यावरण में!' बहुत पसन्द आयी। 'संचार एवं ज्ञान प्रबन्धन का बढ़ता प्रभाव' लेख के अंतर्गत दी गई जानकारियां दिल को छू लेने वाली लगीं। यह पढ़कर आश्चर्य हुआ कि भारत में बायोप्लास्टिक बाज़ार अभी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है। सामान्य प्लास्टिक जीवाश्म ईंधन तथा पेट्रोलियम से बनती है। वास्तव में प्लास्टिक हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। लेकिन जहाँ यह इतनी मजबूत एवं रंग-बिरंगी होती है वहीं इससे होने वाले खतरों को भी नज़र अंदाज नहीं किया जा सकता है। इसलिए हमें 'बायोप्लास्टिक' का ही उपयोग करना चाहिए। इसके इस्तेमाल में किसी भी प्रकार का खतरा नहीं है और यह 'इको-फ्रेन्डली' भी है। अन्त में सीएसआईआर- निस्केयर परिवार को इतनी अच्छी पत्रिका के प्रकाशन हेतु धन्यवाद।

श्री विक्की अग्रहरि, सुपुत्र श्री ओमप्रकाश अग्रहरि, ग्राम व पोस्ट- शाहपुर नगर, पंचायत डुमरियागंज वार्ड नं.-1, जनपद सिद्धार्थ नगर (उत्तर प्रदेश)
[मो. : 07800207477, 08869904851,
ई-मेल : vickyagrahari10@gmail.com]

लक्ष्य साधक पत्रिका

मैं विगत कई वर्षों से विज्ञान प्रगति का पाठक हूँ और इसी पत्रिका के बल पर मैंने ग्रेजुएशन में 68 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। विज्ञान प्रगति हिन्दी भाषा में विज्ञान की गुणवत्ता और विश्वसनीयता युक्त अतुल्य पत्रिका है। वैज्ञानिकों की जीवनी, विज्ञान पर अमूल्य लेख, विज्ञान क्विज़ तथा विज्ञान की नवीनतम जानकारियां इस पत्रिका को अद्वितीय बनाती हैं। मैं सम्पादक महोदय, वैज्ञानिक लेखकों तथा पत्रिका से जुड़े समस्त कार्यकर्त्ताओं का तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के प्रत्येक अंक को पिछले अंक से बेहतर और दिलचस्प बनाने में योगदान दिया।

विज्ञान प्रगति का मई अंक घरेलू विज्ञान के लिए दिलचस्प और अत्यन्त उपयोगी लगा। जून 2014 के अंक में क्या आप जानते हैं? स्तंभ के अंतर्गत 'ई-कचरा : पर्यावरण प्रदूषण का नया आयाम' तथा 'एक से बढ़कर एक', 'अजीब दास्तां है ये', अत्यंत रोचक लगे। मेरी रुचि हमेशा ही अंतरिक्ष विज्ञान, प्रक्षेपास्त्रों तथा हथियारों में रही है। मैं वायुसेना व नौसेना की कई बेहतर सेवाओं में क्वालीफाई कर चुका हूँ। इस सफलता के पीछे विज्ञान प्रगति का हाथ है लेकिन मेडिकली परमानेन्ट अनफिट होने के कारण मेरा अंतिम चयन न हो सका। इस हेतु मैं शुकदेव प्रसाद जी का विशेष रूप से धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करता हूँ जिनके लेखों से मुझे मन की भड़ास मिटाने का मौका मिलता है। कुछ मित्र यद्यपि कला संकाय से हैं लेकिन विज्ञान प्रगति के नियमित अध्ययन के कारण विज्ञान में उनकी काफी रुचि हो गई है और इस वर्ष उन्होंने कॉलेज से विज्ञान क्विज़ जीतकर अनोखी मिसाल पेश की है। इस सबका श्रेय विज्ञान प्रगति को ही जाता है। नए जुड़े पाठकों को सलाह है कि इस पत्रिका का प्रत्येक अंक अमूल्य है, इसका नियमित अध्ययन करें, आप निश्चित ही अपना सटीक लक्ष्य साध सकेंगे। इस पत्रिका के एक भी अंक के छूटने की क्षति-पूर्ति सम्भव नहीं है।

श्री पुष्पेन्द्र सिंह, सुपुत्र श्री रघुनन्दन सिंह, ग्राम व पोस्ट-गाडोली (नदबई), जिला-भरतपुर 321603 (राजस्थान)
[मो. : 09587175287
ई-मेल : psrajnadbai@yahoo.com]

रोचक पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ और मुझे विज्ञान प्रगति के सभी स्तम्भ अत्यन्त रोचक लगते हैं। विशेष लेख के अन्तर्गत संजय कुमार द्विवेदी जी द्वारा लिखित 'विदेशी सब्जियों को देसी तड़का' को पढ़कर अत्यन्त रोचक जानकारियां प्राप्त हुयीं। यह पत्रिका मेरा ही नहीं अपितु समस्त पाठकों का ज्ञानवर्द्धक कर रही है, और मैं विज्ञान प्रगति की पूरी टीम को धन्यवाद देते हुये यही कहना चाहूँगा कि विज्ञान प्रगति की प्रगति में हम सभी की प्रगति है और हम सभी की प्रगति में ही राष्ट्र की प्रगति निहित है। और अंत में एक बार फिर विज्ञान प्रगति की पूरी टीम को धन्यवाद!

श्री सुजीत शर्मा (पर्यावरण चिंतक), ग्राम व पोस्ट- सिकटा (छोटा), जनपद-कुशीनगर 274 303 (उ.प्र.)
[मो. : 09451260040, 09792923689
ई-मेल : sujit1996gkp@gmail.com]

बेजोड़ पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का विगत 4 वर्षों से नियमित पाठक हूँ और प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता दिलाने के दृष्टिकोण से मुझे यह पत्रिका अति महत्वपूर्ण लगी। मैं वर्तमान में सिविल सर्विस की तैयारी कर रहा हूँ और विज्ञान प्रगति की सहायता ले रहा हूँ। अध्ययन करने पर महसूस हो रहा है कि विज्ञान प्रगति बहुत ही ज्ञानवर्द्धक पत्रिका है। विज्ञान प्रगति में मुझे अंतरिक्ष से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी एक ही स्थान पर मिल जाती है। मुझे इस पत्रिका में प्रकाशित होने वाली आमुख कथा बहुत पसंद आती है। इतनी ज्ञानवर्द्धक पत्रिका के प्रकाशन के लिए विज्ञान प्रगति की टीम को धन्यवाद।

श्री अंकित सिंह, सुपुत्र श्री लल्लन बहादुर सिंह, जिला-सुल्तानपुर (उ.प्र.)
[मो.: 08574334514]

अनमोल रत्न

मैं पिछले कई वर्षों से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। मुझे जून 2014 का अंक प्राप्त हुआ जिसमें मुझे प्रवासी पक्षियों, कृषि ज्ञान, तेल, बायोप्लास्टिक के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। मैंने विज्ञान प्रगति के माध्यम से कॉलेज की लैब में अनेक प्रयोग किये जो मेरे मार्ग दर्शक बने। अनेक प्रकार की गैसें, तेलों की

आपके पत्र

जाँच, दूध की जांच करना सीखा, मावे के असली व नकली होने की जांच व उसको बनाना इत्यादि मैंने लैब में सीखा। मुझे विज्ञान प्रगति ने अनुसंधान करने के बारे में सोचना सिखाया। विज्ञान प्रगति एक अनमोल रत्न है जो ज्ञान बढ़ाती है। विज्ञान प्रगति ने मेरे परिवार को ज्ञान रूपी अनमोल रत्न प्रदान किया जिसके लिए मैं विज्ञान प्रगति को बार-बार नमन करता हूँ।

श्री उपेन्द्र प्रताप सिंह भदौरिया, सुपुत्र श्री ठाकुर अतरपाल सिंह (मास्टर), ग्राम-निवाड़ खास, पोस्ट-मानपुर, जिला व तहसील-मुरादाबाद, थाना-भगतपुर 244001 (उ.प्र.),
[मो. : 08954215513, 09536697465,
ई-मेल : upendersingh234@gmail.com]

विज्ञान से प्रकृति की ओर

मैं सिविल इंजीनियरिंग (द्वितीय वर्ष) का छात्र हूँ और विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। मुझे हर माह इस पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार रहता है। 'पर्यावरण दिवस पर विशेष' जून 2014 के अंक से मुझे नये-नये पेड़-पौधे रोपण करने की प्रेरणा मिली। अतः मैंने वृक्षारोपण करने की तैयारी कर ली है। हम विज्ञान से भौतिक विकास चाहे जितना भी प्राप्त कर लें लेकिन यदि हम पर्यावरण विकास नहीं कर पाये तो हमें घोर प्रलयरूपी भविष्य ही उपहार स्वरूप मिलेगा। अतः हम सभी को पर्यावरण विकास पर विशेष ध्यान देना होगा। हमें हर हाल में वृक्षारोपण की जिम्मेदारी लेनी ही होगी। पर्यावरण की समस्या का सबसे सरल समाधान अत्यधिक संख्या में पेड़-पौधों का रोपण करना व प्राकृतिक जीवन शैली अपनाने की आवश्यकता है। आज की अनिश्चित जलवायु हमें आगाह कर रही है कि हम पर्यावरण के विकास में अपना योगदान दें। जून 2014 वाले अंक के सभी स्तम्भ मुझे पसंद आये। ई-कचरा के बारे में छपा लेख 'ई-कचरा : पर्यावरण प्रदूषण का नया आयाम' बेहद जागरूकतापूर्ण था। निःसंदेह ई-कचरा विश्व के समक्ष एक विकराल समस्या बनकर उभर रहा है जिसका समाधान विश्व के सभी राष्ट्रों को वैश्विक स्तर पर करना पड़ेगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि विज्ञान प्रगति भारत की सर्वश्रेष्ठ हिन्दी विज्ञान पत्रिका है।

श्री राहुल बाईन, मेन रोड जामगाँव, ग्राम व पोस्ट- कोलाईबहाल जामगाँव, जिला-रायगढ़ 496001 (छत्तीसगढ़)
[मो. : 09993755149]

शिक्षाप्रद पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का करीब 8-9 वर्षों से नियमित पाठक हूँ। मैं डा. देवकी नन्दन जी का विशेष रूप से आभारी हूँ क्योंकि उनके 'सवाल जब जब, जवाब तब तब' मेरी समस्या का समाधान करते रहते हैं। अगर विज्ञान प्रगति रूपी ज्ञानवर्द्धन का मंदिर नहीं होता तो पता नहीं मेरा क्या होता। जिस प्रकार एक भक्त भगवान की सेवा करता है उसी प्रकार यह मेरा दोस्त व भगवान है। विज्ञान प्रगति पढ़ने से मेरे जीव विज्ञान और रसायन विज्ञान विषय अच्छे हो गए। विज्ञान प्रगति की सहायता से मैंने एफसीआई का टेस्ट पास कर लिया है। मैं आगे चलकर अपनी आमदनी का 10% गरीब बच्चों पर खर्च करके उनको विज्ञान से जुड़ी वस्तुओं के बारे में समझाऊँगा और बताऊँगा कि आज का युग विज्ञान का युग है।

श्री जीतेन्द्र सिंह गंधार, सुपुत्र श्री प्रताप सिंह गंधार, एच-285 सिघेरा, थाना-जमुनापार, तहसील-महापन, जिला-मथुरा 281001 (उ.प्र.) [मो.:08445550072, 08430405049]

अनमोल हीरा

मैं विज्ञान प्रगति का पिछले दो वर्षों से नियमित पाठक हूँ। पहले मैं अपने कोर्स की किताबों को छोड़कर अन्य किसी किताब की ओर ध्यान ही नहीं देता था। एक दिन मेरे एक दोस्त ने मुझे विज्ञान प्रगति की एक प्रति लाकर दी। मैंने उसे पढ़ा और तभी से मेरा मन विज्ञान प्रगति को बार-बार पढ़ने को करता है। जब मैंने विज्ञान प्रगति को एकदम गहराई से पढ़ा तब मुझे लगा कि विज्ञान प्रगति तो वास्तव में ऐसा अनमोल हीरा है जो कोहिनूर से भी बढ़कर है। अन्त में विज्ञान प्रगति परिवार को इतनी अच्छी पत्रिका के प्रकाशन के लिए धन्यवाद देता हूँ।

श्री सुशान्त पाण्डेय, सुपुत्र श्री राकेश कुमार पाण्डेय, ग्राम-अगया, पोस्ट-माली मैनहा-डुमरियागंज, जिला-सिद्धार्थ नगर 272189 (उत्तर प्रदेश)
[मो. : 09170680312]

विज्ञान ज्ञानगंगा

मैं बी.एससी. (बायो) प्रथम वर्ष का छात्र हूँ और पिछले दो वर्षों से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। मुझे नवम्बर 2013 के अंक में सरदार सिंह चारण द्वारा लिखित 'पर्यावरण रक्षक सिद्ध गिद्ध' बहुत ही रोचक और विचारणीय लगा क्योंकि वास्तव में गिद्ध पर्यावरण को साफ रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। इसी तरह जब मुझे अप्रैल 2014 का अंक प्राप्त हुआ तो डी. के. माहेश्वरी जी द्वारा लिखित 'अग्निहोत्र का आध्यात्मिक महत्व' बहुत ही ज्ञानवर्द्धक लगा। इससे कई महत्वपूर्ण नवीन जानकारियां भी मिलीं। इससे पहले मार्च 2013 के अंक में कुलदीप शर्मा जी द्वारा लिखित 'पुस्तक समीक्षा : विज्ञान साहित्य परिचय' भी हम सभी पाठकों के लिए ज्ञानवर्द्धक रहा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि विज्ञान प्रगति में जो विज्ञान क्विज़ आता है उसकी सहायता से मेडिकल प्रवेश परीक्षा में हमें सफलता हाथ लगेगी।

श्री अश्वनी कुमार गंगवार, सुपुत्र डा. बाबूराम गंगवार, ग्राम-पंसोली, पोस्ट-दलेलगंज, तहसील व जिला-पीलीभीत 262 001 (उ.प्र.)
[मो. : 09410627368, 09058870954]

मील का पत्थर

पर्यावरण दिवस पर आधृत विज्ञान प्रगति के जून 2014 का अंक दिल को छू गया है। इसके प्रकृति संबंधी लेख अपनी आकृष्टता के आधार पर काफी ज्ञानवर्द्धक रहे। चित्र कथा तथा सवाल-जवाब शीर्षक अच्छे लगे। डा. टी.एन. खोशू पर लिखी चित्र कथा भी काफी मार्मिक रही। कुल मिलाकर विज्ञान प्रगति के प्रत्येक अंक का अध्ययन प्रतिभागियों के लिए मील का पत्थर साबित होता है। इसके अध्ययन से पाठकों के विज्ञान संबंधित ज्ञान में विशेष निखार आता है। ऐसे में यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि विज्ञान प्रगति हमारी जान नहीं लेकिन शान तो जरूर है। यह निःसंदेह मंजिल तक जाने का मार्ग प्रशस्त कर देती है। यह पाठकों के लिए उस अमृत के समान है।

श्री मंतव्य राज पाण्डेय, पंडित के रामपुर, सीवान (बिहार)
[ई-मेल : mantabyarajpandey@gmail.com]

विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

मैं बचपन से ही विज्ञान सम्बन्धी पाठ्य-सामग्री ढूंढता रहता था किन्तु जब सात वर्ष पहले मेरी नज़र विज्ञान प्रगति पर गयी तब से मन अन्यत्र न भटका क्योंकि यह विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका है। सभी के लिए इसमें कुछ न कुछ अवश्य होता है। मैं तो इसके सारे स्तम्भ पढ़ डालता हूँ। हिन्दी में होने के कारण यह भारत के विशाल जनमानस को लाभ पहुंचा रही है। इसके लेखों में बिल्कुल नई जानकारियाँ होती हैं। मई 2014 के अंक में 'ज़हर का कहर' पढ़कर दुःख हुआ कि वाराणसी जिला आर्सेनिक से बुरी तरह प्रभावित है। यदि घरेलू स्तर पर इससे निपटने के उपाय हों तो अवश्य बताएं।

श्री अरविन्द कुमार पटेल, सुपुत्र श्री शिवनाथ पटेल, ग्राम-सरकारी पुरा, पोस्ट मंडुआडीह, जिला-वाराणसी 221103 (उ.प्र.)

सुनहरा कदम

मुझे विज्ञान प्रगति बहुत पंसद है क्योंकि इसे पढ़कर विज्ञान से सम्बन्धित दुर्लभ और रहस्यमयी बातों की जानकारी आसानी से प्राप्त हो जाती है। विज्ञान प्रगति विज्ञान के क्षेत्र में एक सुनहरा कदम है। इस पत्रिका में बच्चे पशु-पक्षियों, जहाजों और विमानों के चित्रों को देखकर बहुत खुश होते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि विज्ञान प्रगति पढ़ने वाले ये बच्चे आगे चलकर विज्ञान में अधिक रुचि रखेंगे।

श्री आनन्द राज, सुपुत्र श्री राज यादव, ग्राम व पोस्ट-नरेन्द्रपुर, जिला-मधुबनी (बिहार)
[मो. : 08677814252]

आज की जरूरत : विज्ञान प्रगति

चूंकि आज विज्ञान का युग है इसलिए मैं कहता हूँ कि विज्ञान प्रगति नामक इस पत्रिका की जरूरत हर-घर में है। बात दरअसल यह है कि आपने विज्ञान प्रगति के माध्यम से जटिल विज्ञान को इस तरह जनमानस या पाठकों के सामने रखा है कि जटिल विज्ञान, जटिल न बनकर सरल एवं विशिष्ट ज्ञान बन गया है। विज्ञान प्रगति को पढ़ते हुए मैंने पाया है कि यदि यह पत्रिका किसी साधारण पढ़े-लिखे व्यक्ति को भी पढ़ने के लिए थमा दी जाय तब भी वह बहुत हद तक सब कुछ समझ जायेगा और निरन्तर पढ़ने पर तो तमाम भ्रमों व भ्रांतियों को स्वयं ही दूर करता हुआ विज्ञान का एक जानकर भी हो सकता है। तब यह पत्रिका एक विद्यार्थी या शोधार्थी के लिए कितनी महत्वपूर्ण हो सकती है, समझा जा सकता है। आप बधाई के पात्र हैं जो हर माह विज्ञान प्रगति को नये विषय के साथ प्रस्तुत करते हैं।

श्री खेमकरण सोमन, शोध छात्र, प्रथम कुंज, ग्राम व पोस्ट-भूरारानी, रुद्रपुर, जिला-ऊधम सिंह नगर 263153 (उत्तराखण्ड)
[मो. : 09012666896, 09045022156]